

- Οταν οὐδεκάποιων τὸ σοιχεῖον λιπαρεῖς χωρεῖν **A** Quando fuerit decem cubitorum elementum pingue ire ad cænam.
- Θὴλίδειπνον.
- ΒΛ. Περὶ δὲ ιματίων τίς πόρθεῖσι; οὐδὲ τέττας ἔστιν ἔρεδος.
- Πρ. Τὰ μὲν ὄντας ὑπὸ μηνὸν τεφτον ὑπαρξεῖ. τὰ δὲ λοιφοὶ οὐκέτι οὐ φανταζοῦνται.
- ΒΛ. Εν τῷ ζητεῖ πῶς λεῖπει διάφορος αρχοντος θέσης αρχοντος.
- Πόθεν ἀντίσθιον οὐδὲ τοῦ κοινῶν γένεται δίκαιον.
- Πρ. Αλλ' οὐδὲ μίαν τεφτον εἶναι. ΒΛ. πουτὶ πότις θετέρης.
- Πρ. Καὶ τὸ πάντα λαύριον ἐδέμανται. τοῦ οὐδὲν εἴπειν;
- ΒΛ. Πολλῶν ἔνεκεν τὴν θεοπόλινον. τεφτον δὲ ἔνος εἰνεκεν δίπου.
- Ην πειδοῖς οὐδείλων δικαιονήσι. Πρ. πόθεν οὐδὲν εἴδεισον διανείσας;
- Εγκατέλειπεν τοῦ πάντων οὐτον. ΒΛ. ηλέπτων δίπου σ' θετέρην.
- Πρ. Νὴ τὸ Δικαιοῦ εὑνέτει μιδάποιες. ΒΛ. Συτίτων φρεσσιάδω μοι.
- Τῆς αγκαλιας οἱ τύποντες πόθεν ἀντίσθιον, ἐπειδαν
- Εὐωχθέντες οὐβείζωσι. τοῦτο οὐδὲν εἴδεισον διπορίσθιν.
- Πρ. Απὸ τοῦ μάζης οὐτοῦτοι. πάντα οὐδὲν διταν τῆς ἀφαρῆς.
- Οὐχ οὐβείζει φαύλως οὐτος τῇ γαστὶ κολαθεῖσ.
- ΒΛ. Οὐδὲν αὐτὸν ηλέπτησον δεισίεσμα. Πρ. πῶς οὐδὲν φρεσσιάδω μαυτές.
- ΒΛ. Οὐδὲν διπολίσθιον σεχθῆνταντο. Πρ. οὐδὲν οὐποιηκαθεδίστι.
- Οὐδὲν λεῖψεν τὸν αὐτὸν θεόν. Τι οὐδὲν τεφτον οὐδὲν μάζης.
- Ην διπολίσθιον αὐτὸς θεός. Τι οὐδὲν τεφτον οὐδὲν μάζης.
- Επειρον οὐδὲν τοῦ κοινοῦ, κρείτον κομιεῖται κανεῖνα.
- ΒΛ. Οὐδὲν πυβείζουσιν αἵρετοι. Πρ. τοῦτο οὐδὲν τοῦτο ποιήσει.
- ΒΛ. Τίλιοι δὲ μίαταν τίνα ποιήσει. Πρ. ποιώντες τοῦτο οὐδὲν.
- Μίαν οὐκοντι φημι ποιήσειν συρρίξαστος εἰς ἐνδιαφάνειαν.
- Ως τε βαδίζειν οὓς αἰλιάλαγες. ΒΛ. Τὸ δὲ δεῖπνον ποὺ τεθεῖσες;
- Πρ. Τὰ δικασίαια οὐδὲ ταξιδιώτες, αἰδράντες πάντα ποιῶσι.
- ΒΛ. Τὸ δὲ βηματίσθιον εἶσαι; Πρ. τοῦ πεζοῦ πῆρας καταδίπτω.
- Καὶ ταῖς υδρίαις, καὶ ράφαλοις εἴσαι τοῖς παγκάσιοις
- B**
- C**
- D**
- E**
- F**
- G**
- H**
- I**
- J**
- K**
- L**
- M**
- N**
- O**
- P**
- Q**
- R**
- S**
- T**
- U**
- V**
- W**
- X**
- Y**
- Z**
- Α Quando fuerit decem cubitorum elementum pingue ire ad cænam.
- BLE. Curia autem vestes qua inuentio erit? enim hoc est interrogare.
- PR. Hæ quidem existentes vobis, primū erunt, has autem reliquas nos texemus.
- BLE. Vnum adhuc quero, quomodo si qui debet apud dominos pœnam alicui,
- Vnde possidebit hanc? non enim communium est iustum.
- PR. Sed neque pœna primum erunt. BLE. Hoc quot consumet?
- PR. Et ego hanc opinionem posui. cuius enim misericordia erunt?
- BLE. Multorum gratia per Apollinem. primū autem unius gratia.
- Si quis debens negat. PR. Vnde igitur mutuauit mutuans,
- Incommuni omnibus existentibus. BLE. Fur est manifestus.
- PR. Per Cererem bene doces. BLE. Hoc igitur dicatur mihi,
- Verberationes fures unde possidebunt? postquam
- Conuinantes iniuria afficiunt, hoc enim te puto dubicare.
- PR. A placenta quam comedit. hanc enim quando quis auferit,
- Non iniuria afficitur male sic ventre punitus.
- BLE. Neque rursus fur nullus erit. PR. Quomodo enim fur ab orbe meum ipsius?
- BLE. Neque spoliabunt igitur noctibus? PRA. Non si domi dormires
- Neg, si foras sicut prius, vietus enim omnibus erit.
- Si autem spoliabit, ipse dabit: quæ enim ipsi res pugnare?
- Alterum enim iens ex communi melius portabit illo.
- BLE. Neg, talis ludent igitur homines. PR. Circa quid enim hoc faciet?
- BLE. Modum autem vivendi quem facies? PR. Communem omnibus, nam ciuitatem Vnam habitationem dicofacere simul, rumpens in unum omnia,
- Vt coeant inter se. BLE. Cænam autem ubi parabis?
- PR. Fora iudicialia & poricis, diversoria omnia faciam,
- BLE. sedes autem que tibi utilis erit? PR. Crateras deponam,
- Et hydrias, & cantare erit pueris
- νοτο τῷ σκιάνῳ οὔτως οἱ μὴ ἔμβυον Ιοὺς κληθέντας, οἱ δὲ ἀπήγανθοι ταῖσισι οὐδὲν τοῦ ποτίου τοῖς αἰγαῖς, οὐδὲ τοῖς οἰόν τε λεῖψικούρασθε εἰς πόλεας ὥρας προΐην.

Σχόλια. Δεκάποιων. ] οὐδὲν τὸ σκιάνῳ οὔτως οἱ μὴ ἔμβυον Ιοὺς κληθέντας, οὐδὲν τοῦ ποτίου τοῖς αἰγαῖς, οὐδὲν τοῖς οἰόν τε λεῖψικούρασθε εἰς πόλεας ὥρας προΐην.